एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 06, अंक: 03 (मई-जून, 2026)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

महुआ से बदल रही गांव की महिलाओं की तकदीर

डॉ. द्वारका[1], डॉ. कृतिका नायक[2], डॉ. सोनलकुमार गोवर्धन घुगल[3], *निशा चढ़ार[4] एवं शोभाराम ठाकुर[5]

[1]अतिथि शिक्षक, कीटशास्त्र विभाग, ज. नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, कृषि महाविद्यालय, पन्ना, मध्य प्रदेश

[2]अतिथि शिक्षक, सस्यविज्ञान, ज. नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, कृषि महाविद्यालय, पन्ना, मध्य प्रदेश

[3]अतिथि शिक्षक, कीटशास्त्र विभाग, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, कृषि महाविद्यालय, पवारखेड़ा, नर्मदापुरम, मध्य प्रदेश

[4]एम.एससी. (बॉटनी), महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, शासकीय स्नातकोत्तर उत्कृष्ट महाविद्यालय, टीकमगढ़, मध्य प्रदेश

[5]वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, एक्रिप परियोजना तिल फसल, कृषि महाविद्यालय, टीकमगढ़, मध्य प्रदेश

*संवादी लेखक का ईमेल पता: chadarnisha63@gmail.com

करौंदी गांव की महिलाओं ने स्वयं सहायता समूह के माध्यम से महुआ आधारित पौष्टिक कुकीज निर्माण का कार्य शुरू कर आत्मनिर्भरता और ग्रामीण उद्यमिता की एक नई मिसाल प्रस्तुत की है। लगभग 3 लाख रुपए की लागत से स्थापित यूनिट में महिलाएं महुआ से कुकीज, नानखटाई, बिस्कुट और अन्य पौष्टिक उत्पाद तैयार कर रही हैं। इस पहल से महिलाओं को रोजगार और आय का स्थायी स्रोत प्राप्त हुआ है तथा महुआ जैसे पारंपरिक वन उत्पाद को नई पहचान मिली है। महुआ आधारित उत्पाद स्वास्थ्यवर्धक और पोषणयुक्त होने के कारण लोगों के बीच तेजी से लोकप्रिय हो रहे हैं। महिलाओं ने इन उत्पादों को आंगनवाड़ी पोषण आहार में शामिल करने की मांग भी की है, ताकि बच्चों और महिलाओं को पौष्टिक भोजन उपलब्ध कराया जा सके। यह पहल महिला सशक्तिकरण, स्थानीय संसाधनों के मूल्य संवर्धन और ग्रामीण विकास का एक प्रेरणादायक उदाहरण बनकर उभरी है।

परिचय

भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में वन आधारित संसाधनों का सदियों से उपयोग होता रहा है। विशेष रूप से मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़ और आदिवासी क्षेत्रों में महुआ का पेड़ ग्रामीण जीवन, संस्कृति और आजीविका का महत्वपूर्ण हिस्सा माना जाता है। महुआ केवल एक वन उपज नहीं है, बल्कि यह ग्रामीण अर्थव्यवस्था, पोषण सुरक्षा और पारंपरिक जीवनशैली से गहराई से जुड़ा हुआ है। लंबे समय तक महुआ का उपयोग मुख्यतः पारंपरिक घरेलू कार्यों तथा सीमित स्थानीय उपयोग तक ही सीमित रहा। ग्रामीण क्षेत्रों में महुआ के फूलों का उपयोग पारंपरिक खाद्य पदार्थों और अन्य घरेलू उपयोगों में किया जाता था, लेकिन इसके आर्थिक महत्व और मूल्य संवर्धन की संभावनाओं पर बहुत कम ध्यान दिया गया। परिणामस्वरूप बड़ी मात्रा में उपलब्ध महुआ या तो बहुत कम कीमत पर बिक जाता था या कई बार उपयोग के अभाव में नष्ट हो जाता था।

समय के साथ ग्रामीण महिलाओं ने यह महसूस किया कि यदि महुआ जैसे स्थानीय संसाधनों को आधुनिक तकनीक, प्रशिक्षण और प्रसंस्करण से जोड़ा जाए, तो यह रोजगार, पोषण और आय का एक महत्वपूर्ण स्रोत बन सकता है। इसी सोच ने दमोह जिले के जबेरा ब्लॉक के करौंदी गांव की महिलाओं को एक नई दिशा दी। महिलाओं ने स्वयं सहायता समूह के माध्यम से संगठित होकर महुआ आधारित पौष्टिक कुकीज निर्माण का कार्य प्रारंभ किया। यह पहल केवल एक खाद्य प्रसंस्करण गतिविधि नहीं थी, बल्कि ग्रामीण महिलाओं की आत्मनिर्भरता, नवाचार और सामूहिक शक्ति का प्रतीक बनकर सामने आई।

आज यह प्रयास ग्रामीण महिला उद्यमिता का एक सफल मॉडल बन चुका है। महिलाओं ने महुआ को एक पारंपरिक वन उत्पाद से निकालकर आधुनिक बाजार तक पहुंचाया और इसे स्वास्थ्यवर्धक एवं पौष्टिक खाद्य उत्पाद के रूप में नई पहचान दिलाई। यह पहल स्थानीय संसाधनों के मूल्य संवर्धन, महिला सशक्तिकरण, पोषण सुरक्षा तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने की दिशा में एक प्रेरणादायक उदाहरण बन चुकी है।

समस्या की पहचान

ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के सामने रोजगार और स्थायी आय के अवसरों की कमी एक गंभीर समस्या रही है। अधिकांश महिलाएं घरेलू कार्यों तक सीमित रहती थीं और आर्थिक गतिविधियों में उनकी भागीदारी बहुत कम थी। विशेष रूप से आदिवासी एवं वन क्षेत्रों में रहने वाली महिलाओं की आजीविका मुख्यतः मौसमी मजदूरी और वन उपज संग्रह पर निर्भर रहती थी। महुआ जैसे महत्वपूर्ण वन उत्पाद की उपलब्धता होने के बावजूद ग्रामीण समुदाय को इसका पर्याप्त आर्थिक लाभ नहीं मिल पा रहा था। महुआ के फूलों का उपयोग पारंपरिक रूप से सीमित स्तर पर किया जाता था, जबकि इसके पोषण और व्यावसायिक महत्व के प्रति जागरूकता का अभाव था। गांवों में महुआ को अक्सर कम मूल्य का उत्पाद समझा जाता था और कई बार इसकी उचित खरीद एवं विपणन व्यवस्था न होने के कारण यह खराब हो जाता था। महिलाओं के पास खाद्य प्रसंस्करण, पैकेजिंग, ब्रांडिंग तथा विपणन से संबंधित तकनीकी जानकारी और संसाधनों की भी कमी थी। इसके अतिरिक्त ग्रामीण क्षेत्रों में पौष्टिक खाद्य पदार्थों की उपलब्धता भी एक महत्वपूर्ण समस्या थी। विशेष रूप से महिलाओं और बच्चों में कुपोषण की समस्या व्यापक रूप से देखी जाती थी। बाजार में उपलब्ध अधिकांश पैकेज्ड खाद्य पदार्थ महंगे होने के साथ–साथ पोषण की दृष्टि से भी सीमित होते थे। ऐसे में स्थानीय स्तर पर उपलब्ध पोषणयुक्त संसाधनों का उपयोग कर स्वास्थ्यवर्धक खाद्य उत्पाद तैयार करने की आवश्यकता महसूस की गई। इन्हीं समस्याओं को ध्यान में रखते हुए करौंदी गांव की महिलाओं ने महुआ आधारित पौष्टिक कुकीज निर्माण का निर्णय लिया, ताकि स्थानीय संसाधनों का मूल्य संवर्धन हो सके, महिलाओं को रोजगार प्राप्त हो तथा ग्रामीण समुदाय को पौष्टिक खाद्य विकल्प उपलब्ध कराए जा सकें।

उद्देश्य

इस पहल का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना तथा स्थानीय संसाधनों के माध्यम से रोजगार और आय के अवसर विकसित करना था। इसके साथ ही महुआ जैसे पारंपरिक वन उत्पाद को आधुनिक खाद्य प्रसंस्करण से जोड़कर उसकी आर्थिक उपयोगिता बढ़ाना भी इस परियोजना का महत्वपूर्ण लक्ष्य था। महिलाओं ने यह प्रयास किया कि महुआ आधारित पौष्टिक उत्पाद तैयार कर उन्हें बाजार में उपलब्ध कराया जाए, जिससे लोगों को स्वास्थ्यवर्धक एवं स्थानीय खाद्य विकल्प मिल सकें। इसके अलावा आंगनवाड़ी एवं पोषण आहार योजनाओं में महुआ आधारित उत्पादों को शामिल कराने का उद्देश्य भी रखा गया, ताकि महिलाओं एवं बच्चों को पोषणयुक्त आहार उपलब्ध कराया जा सके। यह पहल महिला सशक्तिकरण, ग्रामीण रोजगार, पोषण सुरक्षा तथा स्थानीय उत्पादों को बाजार से जोड़ने की दिशा में एक समेकित प्रयास के रूप में शुरू की गई।

कार्यान्वयन प्रक्रिया

करौंदी गांव की महिलाओं ने स्वयं सहायता समूह बनाकर इस कार्य की शुरुआत की। प्रारंभिक चरण में महिलाओं को महुआ प्रसंस्करण, खाद्य निर्माण, स्वच्छता, पैकेजिंग और विपणन का प्रशिक्षण प्रदान किया गया। जिला प्रशासन एवं संबंधित विभागों के सहयोग से महिलाओं को आधुनिक खाद्य प्रसंस्करण तकनीकों की जानकारी दी गई। लगभग 3 लाख रुपए की लागत से महुआ कुकीज निर्माण यूनिट स्थापित की गई। शुरुआत में छोटे स्तर पर उत्पादन किया गया, लेकिन धीरे–धीरे उत्पादों की मांग बढ़ने लगी। महिलाओं ने महुआ को अन्य पौष्टिक सामग्री के साथ मिलाकर कुकीज, नानखटाई, मिलेट कुकीज, लड्डू और बिस्कुट जैसे उत्पाद तैयार करना शुरू किया। उत्पादों की गुणवत्ता बनाए रखने के लिए स्वच्छता एवं मानक प्रक्रियाओं का विशेष ध्यान रखा गया। आकर्षक पैकेजिंग एवं स्थानीय ब्रांडिंग के माध्यम से उत्पादों को बाजार में प्रस्तुत किया गया। महिलाओं ने स्थानीय बाजारों, मेलों और प्रदर्शनियों में अपने उत्पादों का प्रचार–प्रसार किया, जिससे लोगों के बीच इनकी पहचान बढ़ने लगी।

नवाचार की विशेषताए

- इस पहल की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें स्थानीय वन उपज महुआ को आधुनिक खाद्य उत्पाद के रूप में विकसित किया गया। पारंपरिक रूप से उपयोग किए जाने वाले महुआ को पौष्टिक कुकीज एवं अन्य उत्पादों में परिवर्तित कर उसकी बाजार उपयोगिता बढ़ाई गई।

- यह नवाचार केवल खाद्य प्रसंस्करण तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इससे महिला सशक्तिकरण, स्थानीय रोजगार और पोषण सुरक्षा को भी बढ़ावा मिला। महुआ आधारित कुकीज स्वास्थ्यवर्धक होने के साथ–साथ स्थानीय स्वाद और पारंपरिक पहचान को भी बनाए रखती हैं।
- इसके अतिरिक्त इस पहल ने ग्रामीण महिलाओं को उत्पादन, पैकेजिंग, विपणन और उद्यम प्रबंधन जैसी गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी का अवसर प्रदान किया। यह मॉडल स्थानीय संसाधनों के मूल्य संवर्धन और "लोकल टू ग्लोबल" की अवधारणा का उत्कृष्ट उदाहरण बन गया है।

उपलब्धियां एवं प्रभाव

- इस पहल से करौंदी गांव की महिलाओं को स्थायी रोजगार और आय का स्रोत प्राप्त हुआ। महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने लगीं तथा उनके जीवन स्तर में सुधार आया। महुआ जैसे पारंपरिक वन उत्पाद को नई पहचान मिली और लोगों में इसके पोषण महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ी।
- महुआ आधारित उत्पादों की बाजार में मांग बढ़ने लगी, जिससे स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर विकसित हुए। महिलाओं में आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता का विकास हुआ तथा वे सामाजिक और आर्थिक निर्णयों में अधिक सक्रिय भूमिका निभाने लगीं।
- इस पहल का सकारात्मक प्रभाव ग्रामीण पोषण सुरक्षा पर भी पड़ा। महुआ आधारित कुकीज एवं अन्य उत्पाद पौष्टिक तत्वों से भरपूर हैं, जो विशेष रूप से महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य के लिए लाभकारी सिद्ध हो सकते हैं। यही कारण है कि महिलाओं ने इन उत्पादों को आंगनवाड़ी पोषण आहार में शामिल करने की मांग भी की है।

निष्कर्ष

महुआ आधारित पौष्टिक कुकीज निर्माण की यह सफलता कहानी ग्रामीण महिला सशक्तिकरण, स्थानीय संसाधनों के मूल्य संवर्धन और आत्मनिर्भरता का एक उत्कृष्ट उदाहरण है। करौंदी गांव की महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिया कि यदि स्थानीय संसाधनों को वैज्ञानिक दृष्टिकोण, प्रशिक्षण और सामूहिक प्रयासों से जोड़ा जाए, तो वे बड़े आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन का आधार बन सकते हैं। यह पहल न केवल महिलाओं के लिए रोजगार और आय का माध्यम बनी, बल्कि इसने महुआ जैसे पारंपरिक वन उत्पाद को राष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान दिलाने का कार्य भी किया। यह मॉडल ग्रामीण विकास, पोषण सुरक्षा, महिला उद्यमिता और टिकाऊ आजीविका की दिशा में एक प्रेरणादायक उदाहरण है, जिसे अन्य क्षेत्रों में भी अपनाया जा सकता है।